शब्दकोश

यहाँ तुम्हारे लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों तथा उनसे जुड़े हुए हैं और तुम्हारे लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर तुम यह अनुमान खुद लगाओ कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से तुम इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हो–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुल्लिग	मु.	–	मुहावरा
वि.	–	विशेषण	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग
सं.	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया

अ

अंट-शंट [वि.पु.]–फ़ालतू या बेकार (की चीज़)

अंचल [पु.]–साड़ी, ओढ़नी आदि जैसे कपड़ों का किनारे का हिस्सा, आँचल

अडिग [वि.]–स्थिर, न डोलने वाला

अनादिकाल [वि.]–जो सदा से चला आ रहा हो

अनुकरण [सं.पु.]–नकल, किसी की देखा-देखी करना

अबूझ [वि.]–जिसे बूझा या समझा न जा सके, अनबूझ

अभिराम [वि.]–सुंदर, मोहक

अवलोकन [सं.पु.]–बारीकी से देखना, जाँचना-परखना

आ

आगंतुक [वि.]–आनेवाला

ऑलिव ऑयल [सं.]–जैतून का तेल

आस्तीन [स्त्री.]–कुर्ते, कमीज़ जैसे सिले हुए कपड़े की बाँह

आह्लादकर [पु.]–खुशी देनेवाला

आह्वान [पु.]–बुलावा, आमंत्रण, पुकार

© NCERT not to be republished

उ

उकेरना [स.क्रि.]–खोदकर उठाना
उद्दाम [वि.]–बंधन रहित, बहुत ज़्यादा
उष्णता [सं.]–गरमी

ओ

ओजस्वी [वि.]–ओजभरा, प्रभावपूर्ण, शक्तिशाली

क

कंटक [पु.]–काँटा
कतरा [पु.]–बूँद
कनी [स्त्री.]–बूँदें, कण
कमतर [वि.]–कम महत्त्वपूर्ण, कम करके आँकना
करताल [पु.]–एक प्रकार का वाद्य-यंत्र
कल [स्त्री.]–चैन
काढ़ना [स.क्रि.]–निकालना
काम आना [मु.]–युद्ध में मारा जाना, शहीद होना
कारकुन [वि.]–कारिंदा, काम करने वाला
कालगति [स्त्री.]–मृत्यु
कार्निस [सं.] दीवार की कँगनी
कित [अ.]–कहाँ
कृत्रिम [वि.]–बनावटी
केतिक [वि.]–कितना
कैस्टर ऑयल [सं.]–अरंडी का तेल
कोरस [वि.[–एक साथ मिलकर गाना
कौपीनधारी [पु.]–धोती पहनने के एक विशेष ढंग के कारण यह विशेषण गांधी जी के लिए प्रयोग में लाया जाता था, लँगोटी धारण करनेवाला

ख

खपच्ची [स्त्री.]– बाँस की तीली
खलना [अ.क्रि.]–अखरना
खाक [स्त्री.]–धूल, मिट्टी, राख
खाखरा [पु.]–एक गुजराती व्यंजन
खाट [पु.]–चारपाई
खिचड़ी [स्त्री.]–मिला-जुला
खीझना [अ.क्रि.]–झुँझलाना, क्रुद्ध होना

ग

गरबीली [वि.]–गर्व करने वाली
गरारा [पु.अ.]–ढीली मोहरी का पाजामा
गलतफ़हमी [स्त्री.]–गलत समझना
गलीचा [पु.]–सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन
गात [पु.]–शरीर
गाथा [स्त्री.]–कहानी
गिर्द [अ.]–आसपास
गुलज़ार [वि.]–खिले हुए फूलों से भरा हुआ, फुलवारी
गोकि [वि.]–हालाँकि, यद्यपि
गोट [स्त्री.]–सुंदरता के लिए कपड़े पर लगाई जाने वाली पट्टी, फुलकारी, मगज़ी

घ

घरीक [अ.]–घड़ीभर, क्षणभर
घात [वि.]–छल, चाल

च

चंद [वि.]–कुछ
चटक [पु.]–रंग की शोखी / भड़कीला / चटकीला

© NCERT not to be republished

च्वै–आँसू बह चले
चबेना [पु.]–चबाकर खाने वाली खाद्य सामग्री
चाँदनी [स्त्री.]–चंदोवा, ऊपर से ताना गया कपड़ा
चारु [वि.]–सुंदर
चिथड़े [पु.]–फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़
चुनिंदा [वि.]–चुना हुआ
चुन्नट [स्त्री.]–सिलवट

छ

छबीली [वि.]–सुंदर
छरहरा [वि.]–चुस्त, फुर्तीला

ज

जमघट [पु.]–एक जगह इकट्ठे लोगों की भीड़, जमाव
ज़र्रा [पु.अ.]–कण
जानि [स्त्री.सं.]–जानकर
जुंडी [स्त्री.सं.]–जौ और बाजरे की बालियाँ

झ

झलकीं [स्त्री.]–दिखाई दीं
झाँझ [स्त्री.]–काँसे की दो तश्तरियों से बना हुआ वाद्य-यंत्र

ट

टरकाना [स.क्रि.]–खिसका देना, टाल देना
टीपना [स.क्रि.]–हू-ब-हू उतारना, नकल करके लिखना

ठ

ठाढ़े [वि.]–खड़े

ड

डग [पु.]–कदम

त

तश्तरी [स्त्री.]–थालीनुमा प्लेट
तिय [स्त्री.]–पत्नी
तिहाकर [स.क्रि.]–तह लगाकर

द

दए [क्रि.]–रखना, धरना
दरख्वास्त [सं.स्त्री]–निवेदन, अर्ज़ी
दरिया [सं.पु.]–नदी
दामन [सं.पु.]–पहाड़ के नीचे की ज़मीन
दिव्य [वि.]–बढ़िया, भव्य

द्य

द्योतक [वि.]–सूचक

द्व

द्वंद्व [सं.पु.]–संघर्ष
द्वै [वि.]–दो

ध

धरि – रखकर
धीर [वि.]–धैर्य, धीरज

न

नाह [पु.]– पति, स्वामी
निकसी [स्त्री.क्रि.]–निकली
निपात [वि.]–गिरना, पतन
नियामत [स्त्री.]–ईश्वर की देन

© NCERT not to be republished

निष्फल [वि.]–जिसका कोई फल न हो।
निस्पृह [वि.]–इच्छा रहित

प

पंखा [पु.]–हाथ से झलनेवाला पंखा, बेना
पखारैं [स.क्रि.]–धोना
पगडंडी [स्त्री.]–खेत या मैदान में पैदल चलनेवालों के लिए बना पतला रास्ता
पर्नकुटी [स्त्री.]–पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया
परिखौ [स.क्रि.]–प्रतीक्षा करना, परखना
पसेउ [पु.]–पसीना
पुट [पु.]–होंठ
पुर [वि.]–नगर, किला
पेचीदा [वि.]–उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा
प्रकोप [पु.]–बीमारी का बढ़ना, बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप
प्रतिदान [पु.]–किसी ली हुई वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना
प्रागैतिहासिक मानव [वि.]–इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव
पोंछि–पोंछकर

फ

फ़िरंगी [पु.]–विदेशी, अंग्रेज़ (भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त)
फ़िरोज़ी [स्त्री]–फ़ीरोज़े के रंग का
फ़ौलादी [वि.]–फ़ौलाद (लोहे) से बना बहुत कड़ा या मज़बूत
फ़्रिल [सं.]–झालर

ब

बघारना [स.क्रि.]–पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना
बदहज़मी [स्त्री.]–अपच, अजीर्ण
बिलोचन [पु.]–नेत्र
बुंदेले हरबोलों [पु.]–बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थी
बुरकना [स.क्रि.]–चूरे जैसी किसी चीज़ को छिड़कना
बुहारी [स.क्रि.]–बुहारनेवाली चीज़, झाड़ू
बूझति [स्त्री. सं.क्रि.]–पूछती है
बेज़ार [वि.]–परेशान
बैरिस्टरी [स्त्री.]–वकालत

भ

भूभुरि [स्त्री.]–गरम रेत, गरम धूल
भृकुटी [स्त्री.]–भौंहें
भेड़ लेना [स.क्रि.]–भिड़ा देना, सटा देना, बंद करना

म

मंशा [पु.]– इरादा
मग [सं.पु.]–रास्ता
मनुज [पु.]–मनुष्य
मरज (मर्ज़) [पु.]–बीमारी
मुदित [वि.]–मोदयुक्त, आनंदित
मुमकिन [वि.अ.]–संभव

© NCERT not to be republished

य

यान [पु.]–वाहन

ल

लरिका [पु.]–लड़का
लैम्प [पु.]–चिराग
लोच [स्त्री.]–लचीलापन, लचक

व

वात [पु.]–शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने से होनेवाला रोग
वारि [पु.]–जल
विकट [वि.]–भयंकर, दुर्गम, कठिन
विजन [वि.]–निर्जन या एकांत जगह
विरुदावली [वि.]–विस्तृत कीर्ति-गाथा, बड़ाई
व्यूह रचना [स्त्री.]–समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा-पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना

श

शख़्सियत [स्त्री.]–व्यक्तित्व
शिफ़्ट [स.क्रि.]–पारी
शिविर [पु.]–रहने या आराम करने के लिए तंबू गाड़कर अस्थायी रूप से बनाई गई जगह

स

समाँ [पु.]–वातावरण, माहौल, समय
सहल [वि.]–आसान
सॉक्स [सं.]–मोज़ा, जुराब
साँकल [स्त्री.]–दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की कड़ी
सिम्त [स्त्री.]–दिशा
सिरजती [स्त्री.]–बनाती, सृजन करती
सिलसिला [वि.]–क्रम
सीरत [स्त्री.]–गुण
सीस [पु.]–शीश, सिर
सुभट [पु.]–रणकुशल, योद्धा
स्टॉक [सं.]–संग्रह, भंडार
स्टॉकिंग [स्त्री.]–लंबी जुराब

ह

हाज़मा [वि.]–पाचन-शक्ति
हिकमत [वि.स्त्री.]–युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त [वि.स्त्री.]–रक्षा
हेकड़ी [वि.स्त्री.]–घमंड
हेय [वि.]–हीन, तुच्छ

© NCERT not to be republished

मत बाँटो इंसान को

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

अभी राह तो शुरू हुई है–
मंज़िल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी–
हर दीपक मजबूर है।।

मिला न सूरज का संदेसा–
हर घाटी-मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को ।।

अब भी हरी भरी धरती है–
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना–
जलता रेगिस्तान है।।

अभी प्यार का जल देना है–
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

साथ उठें सब तो पहरा हो–
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक हो–
खिलती हुई बहार पर।।

रौंद न पाएगा फिर कोई–
मौसम की मुसकान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

❑ *विनय महाजन*

© NCERT not to be republished